एकलव्य

मितवा

कमला भसीन

चित्रः शिवांगी





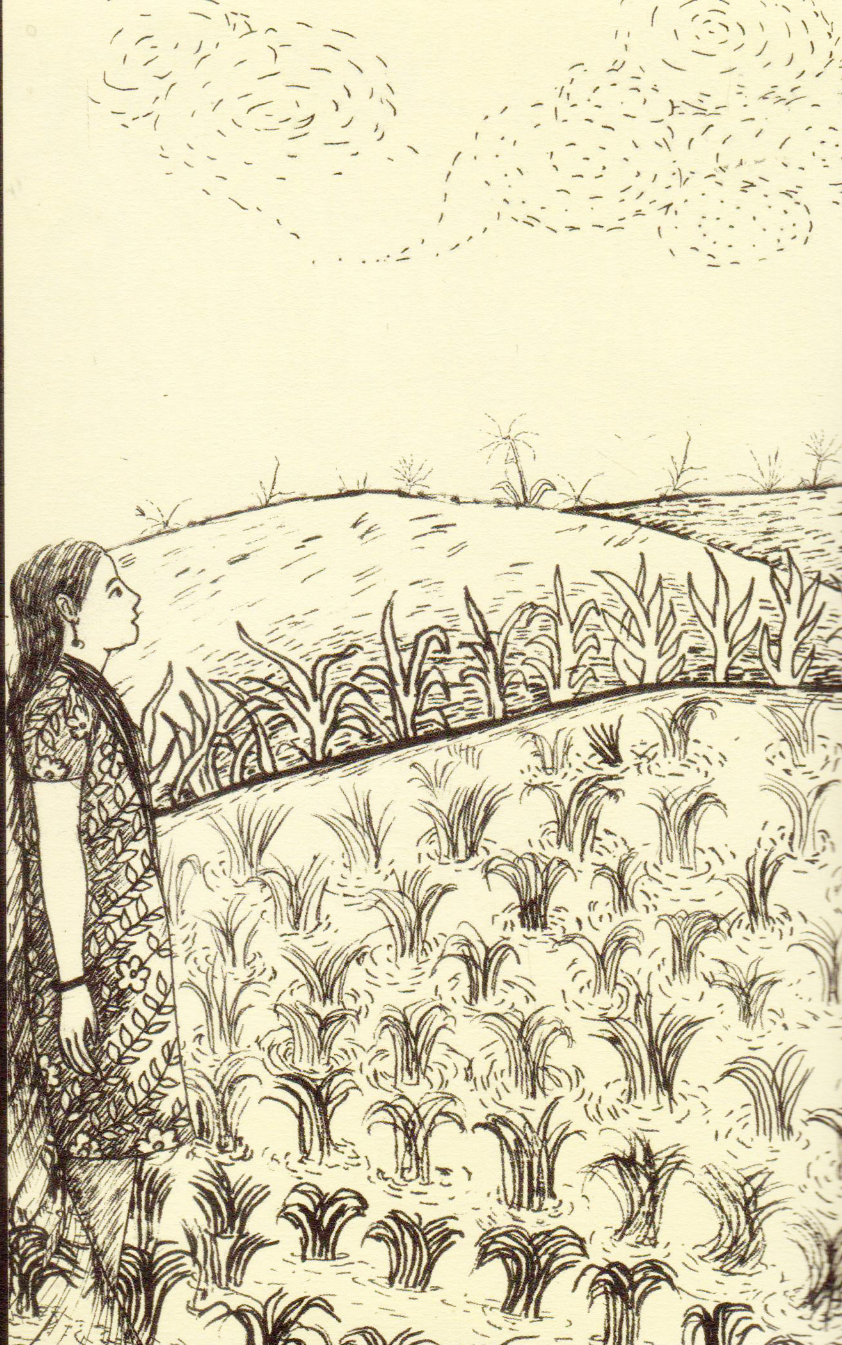
मितवा

कमला भसीन

चित्रः शिवांगी

एकलव्य

मैं पंजाब के एक सिख परिवार की बेटी हूँ। मेरी उम्र 20 साल है। हम एक गाँव में रहते हैं। यहाँ ज़्यादातर परिवार खेती करते हैं। कुछ किसान बहुत अमीर हैं। उनके बड़े-बड़े खेत हैं, कई ट्रैक्टर हैं। फसल काटने की बड़ी-बड़ी मशीनें भी हैं।







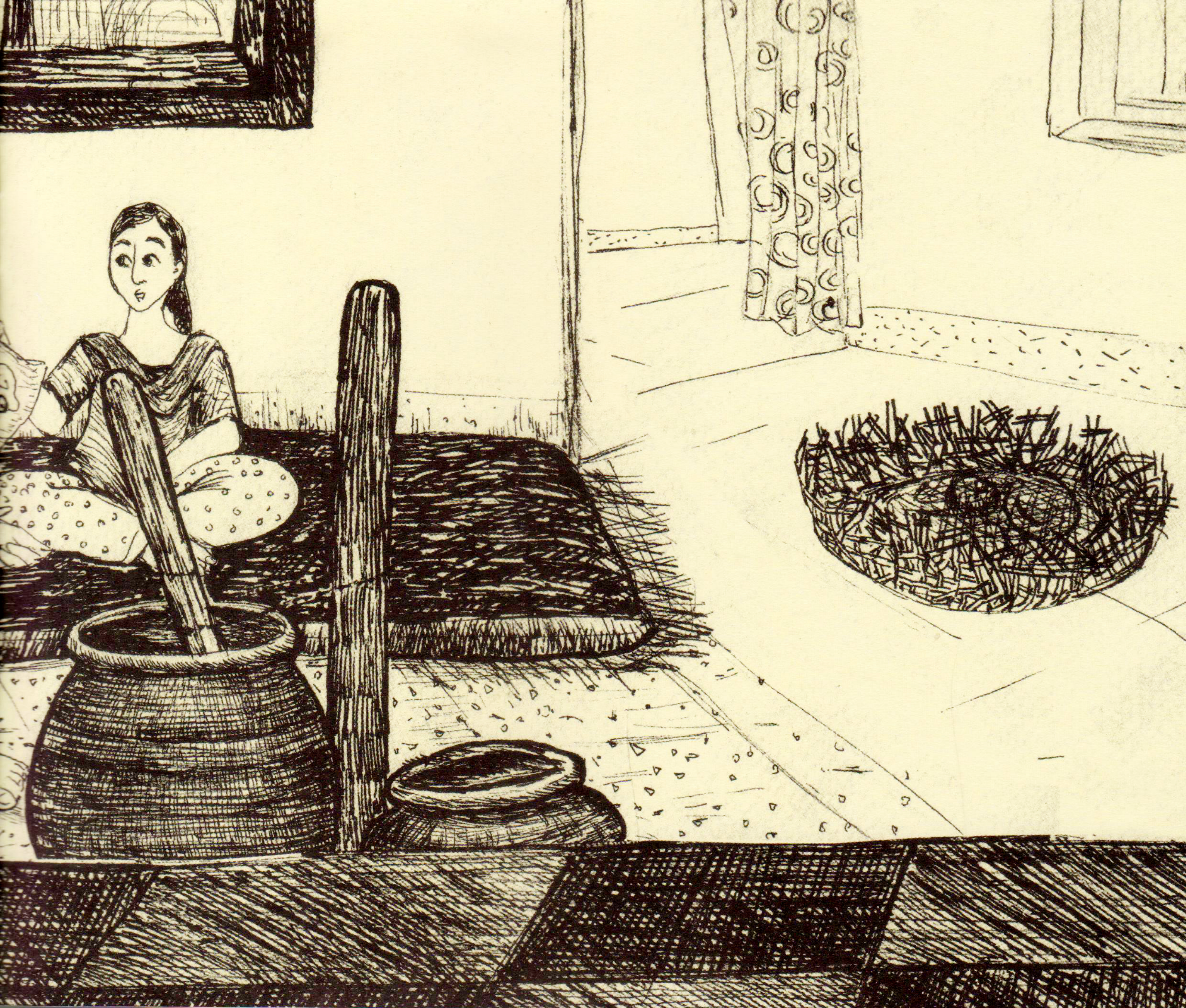


मेरे पिताजी भी किसान हैं, न बड़े न छोटे। मेरी माँ भी किसान हैं। हल चलाने के अलावा माँ खेत पर सब काम करती हैं, जैसे पानी देना, बीज बोना, कटाई करना। सब से बड़ा काम जो माँ करती हैं वो है फसलों से दोस्ती और प्यार करना।

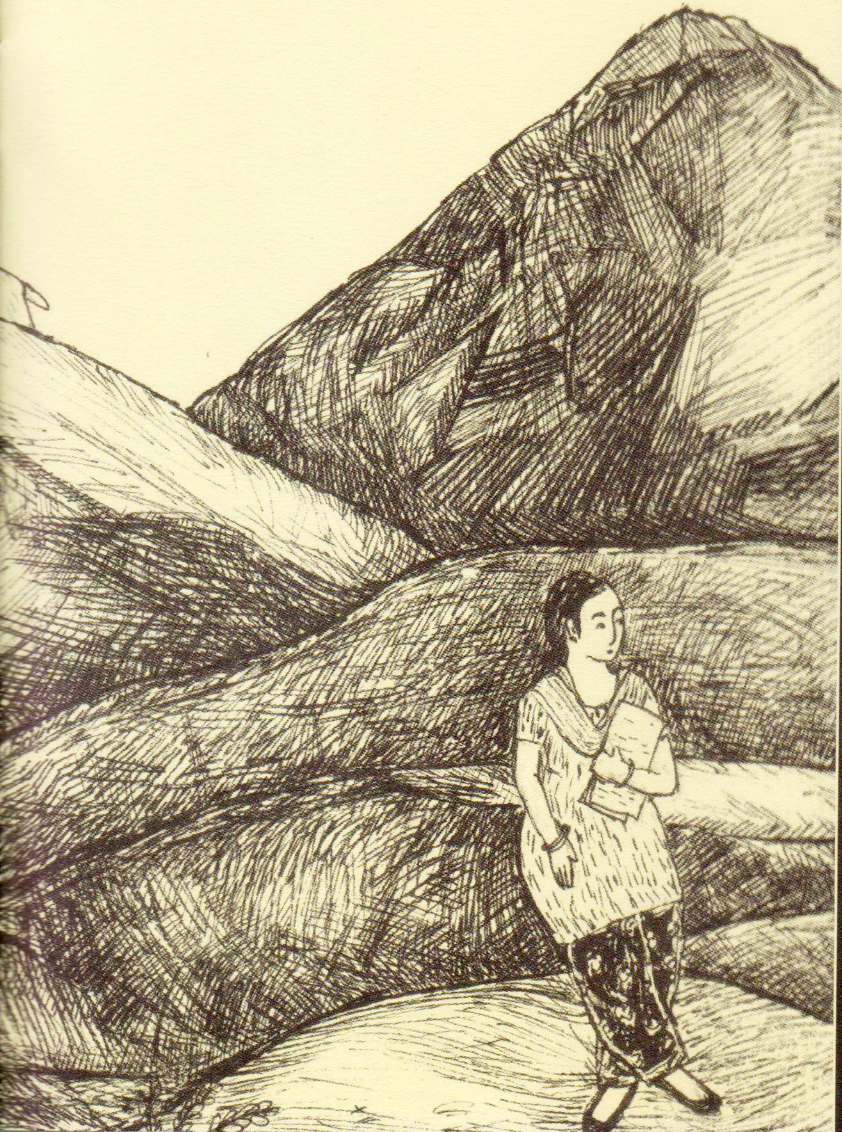
मेरा नाम है मितवा, यानी प्यारी दोस्त। माँ ने मुझे यह नाम दिया था। जब मैं पैदा हुई तो माँ को लगा उनकी सहेली आ गई है, मन की मीत आ गई है। मैं माँ की मितवा, माँ मेरी मितवा। मेरे दो वीरजी हैं – दलजीत और मनजीत।

आज मैं सोचती हूँ कि मेरी किस्मत अच्छी थी जो मुझ से पहले दो भाई हैं। अगर दो बहनें होतीं तो मैं पैदा ही नहीं होती। हमारे गाँव में कई बेटियों को पैदा होने से पहले ही मार देते हैं। इसीलिए यहाँ लड़कियाँ कम हैं। मुझे समझ में नहीं आता कि लोग लड़कियों से क्यों नफरत करते हैं, उन्हें लड़कों से कम क्यों समझते हैं।









मेरे पिताजी मुझे प्यार तो करते थे मगर उन्हें अपना प्यार दिखाना नहीं आता था। वो अधिकार ज़्यादा दिखाते थे, प्यार कम। शायद पिताजी दोनों वीरजी को ज़्यादा प्यार करते थे। वे उन्हें अपने साथ रखते थे, बाहर ले जाते थे, ज़्यादा आज़ादी देते थे। वैसे पिताजी उनको डाँटते भी खूब थे। पिताजी से हम सब को डर लगता था। उनका धौंस जमाना किसी को अच्छा नहीं लगता था। सब से ज़्यादा धौंस वो माँ पर जमाते थे। वे माँ को साथी नहीं दासी समझते थे। माँ पिताजी को कुछ नहीं कहती थीं। मुझ से बात करके माँ अपना मन हल्का कर लेती थीं।

मैंने पास के गाँव के सरकारी स्कूल से 12वीं क्लास पास की। मुझे स्कूल तो भेजा गया मगर उसके अलावा बाहर जाने की, बाहर खेलने की आज़ादी नहीं दी गई। पिताजी कहते थे, "शरीफ लड़कियाँ बाहर नहीं जातीं।" मैं मन ही मन कहती, "हाँ, सिर्फ बदमाश लड़के बाहर घूमते हैं।" उनकी वजह से लड़कियों को घर में बन्द रहना पड़ता है।

साइकिल चलाना मैंने चोरी-चोरी मनजीत वीरजी से सीखा। मेरे यह भाई बहुत ही कोमल दिल के हैं, नम्र हैं। वे मुझे अपने से कम नहीं समझते।







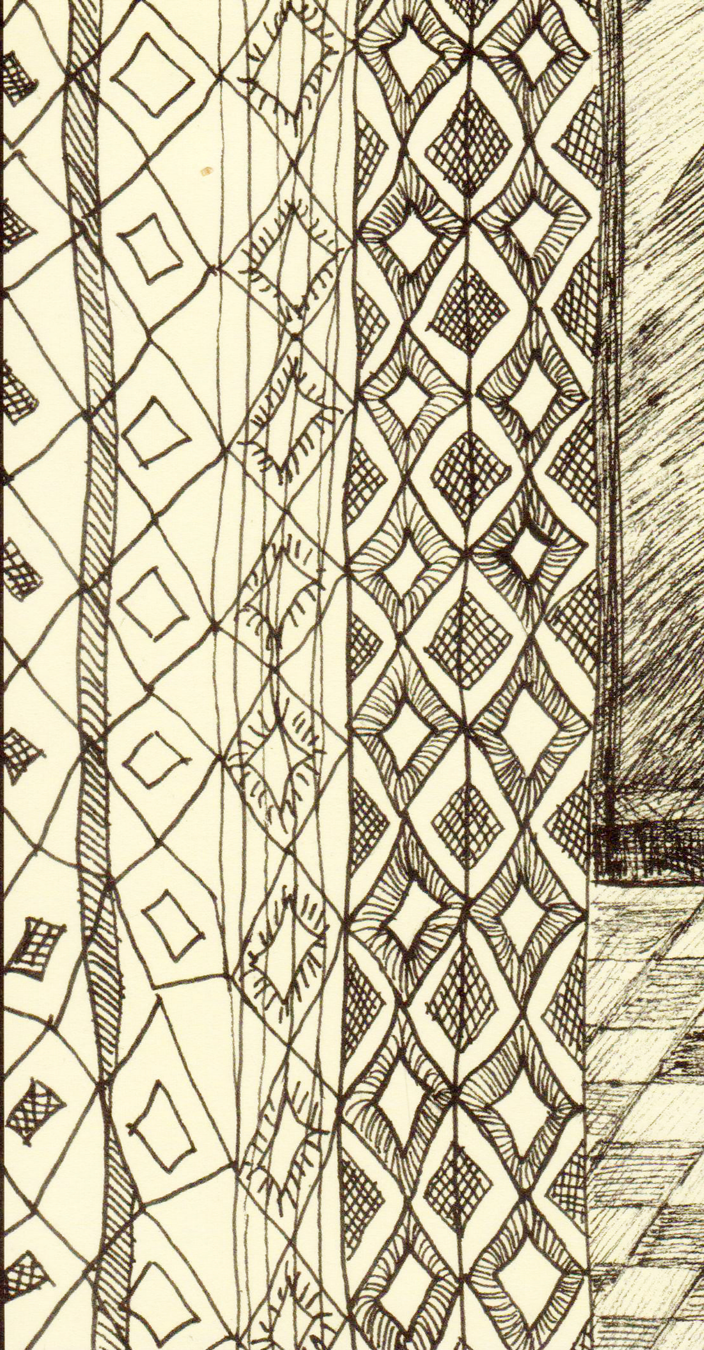


दो साल पहले पिताजी ने एक ट्रैक्टर खरीदा था। दोनों वीरजी जल्दी ही ट्रैक्टर चलाना सीख गए। उन्हें ट्रैक्टर चलाते देख पिताजी बहुत खुश होते। मेरा भी बहुत मन था ट्रैक्टर सीखने का। मैं 18 साल की थी। स्वस्थ थी। मगर पिताजी ने कह दिया, "लड़कियाँ ट्रैक्टर नहीं चलातीं।" यह सुनकर मेरा मन बहुत दुखा मगर पिताजी की बात ठीक हो या गलत माननी ही पड़ती थी।

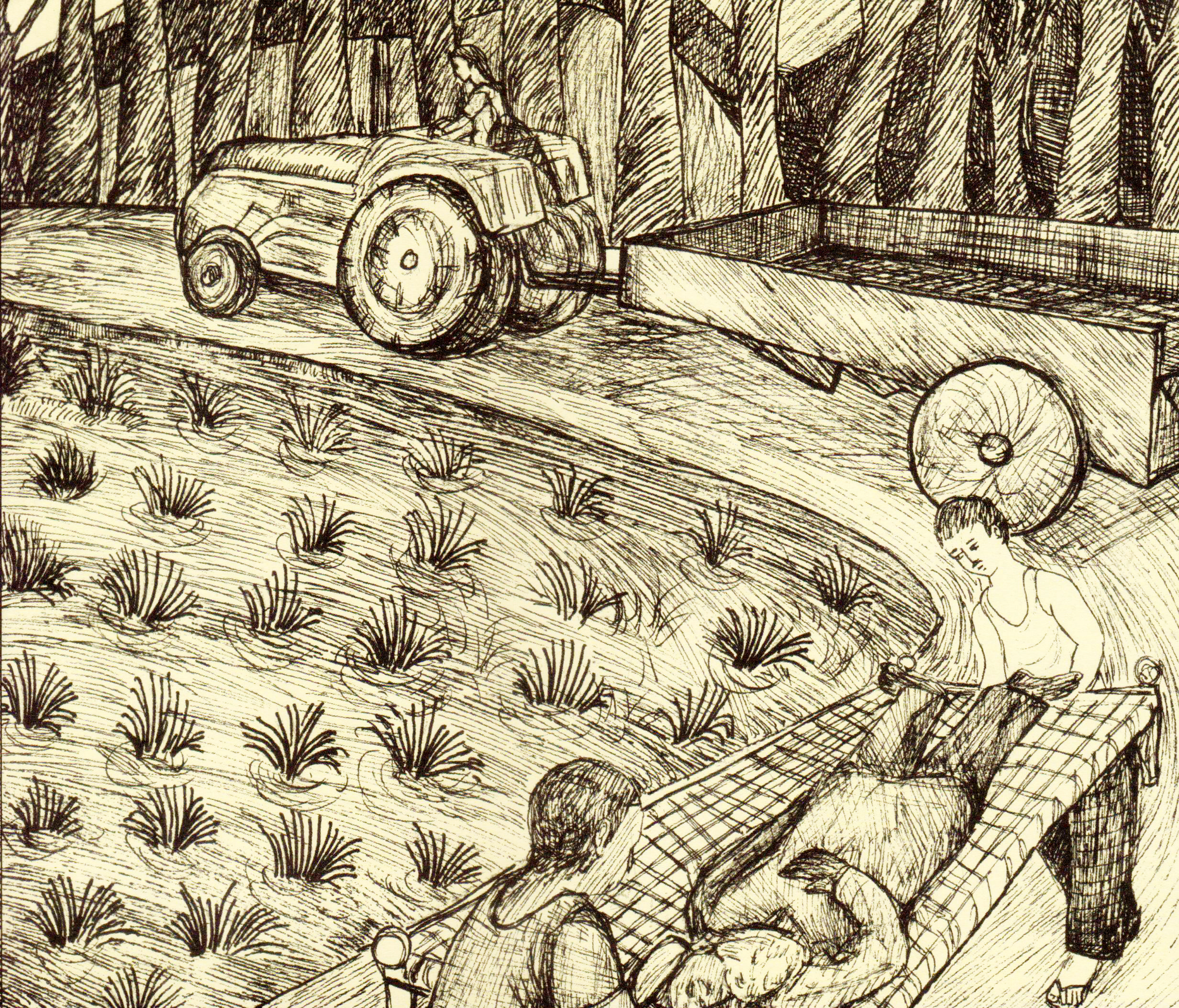
मगर अब पिताजी बहुत बदल गए हैं। मैं बताती हूँ यह बदलाव क्यों और कैसे आया।

सात-आठ महीने पहले एक दिन अचानक पिताजी को दिल का दौरा पड़ा। दोनों वीरजी किसी काम से उस दिन शहर गए थे। घर पर सिर्फ माँ, दो खेत मज़दूर और मैं थे।

हमारे गाँव में कोई अच्छा डॉक्टर नहीं है। बड़ा सरकारी अस्पताल पाँच किलोमीटर दूर है। पिताजी की हालत तेज़ी से बिगड़ रही थी। उनका तुरन्त अस्पताल पहुँचना बहुत ज़रूरी था। बेहद डरी हुई और निराश आवाज़ में पिताजी बुदबुदाए, "इस वक्त मेरे बेटे यहाँ होते तो शायद मेरी जान बच जाती!" बोलते-बोलते वे बेहोश हो गए।









हालात को सम्हालते हुए, मैंने माँ और दोनों मज़दूरों से कहा, "जल्दी से पिताजी की मंजी को ट्रैक्टर-ट्राली में रखते हैं। उन्हें अस्पताल ले जाना है।" वे तीनों हैरान थे, मगर उन्होंने वही किया जो मैंने कहा।

बिना देर किए हम अस्पताल पहुँच गए। खुशकिस्मती से दिल के डॉक्टर वहाँ मौजूद थे। पिताजी का इलाज तुरन्त शुरू हो गया। डर से हमारी जान निकल रही थी। पर जल्दी ही उनकी हालत सम्हल गई। और हम सब की साँस में साँस आई।

पिताजी को होश आने पर माँ और मैं उनके कमरे में गए। पिताजी ने आँखें खोलीं, हमें देखा और धीमी आवाज़ में माँ से पूछा, "मैं अस्पताल कैसे पहुँचा? कौन लाया मुझे यहाँ?"

मितवा/MITWA
कहानी: कमला भसीन
चित्रांकन: शिवांगी
डिज़ाइन: कनक शशि

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
संस्करण: अक्तूबर 2017/ 3000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 210 gsm पेपर बोर्ड (कवर)

ISBN: 978-93-85236-36-5
मूल्य: ₹ 40.00
प्रकाशक: एकलव्य
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)
फोन: +91 755 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट, भोपाल, फोन: 91 755 268 7589

कमला भसीन

1970 से मानव अधिकारों स्त्री-समानता, सतत विकास जैसे मुद्दों पर काम कर रही हैं। वे कई स्वयं सेवी संस्थाओं और नेटवर्कों के साथ काम करती हैं। उन्होंने 27 साल संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से काम किया। उनका खास काम समाज कर्मियों का प्रशिक्षण तथा उनके लिए सरल भाषा में सामग्री तैयार करना रहा है। वे बच्चों के लिए भी लिखती हैं। कमला जब सफर नहीं कर रही होतीं तब दिल्ली में रहती हैं।

शिवांगी

स्वतंत्र रूप से चित्रकारी करती हैं। कॉलेज ऑफ आर्ट, दिल्ली से चित्रकला फाइन आर्ट्स में स्नातक और अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली से विज़्युअल आर्ट्स में स्नातकोत्तर। उन्होंने एकलव्य के साथ विभिन्न पब्लिकेशन प्रोजेक्टों में काम किया है। चित्रकारी, क्यूरेशन और शिक्षा में उनकी विशेष रुचि है। 2015-17 के बीच उन्होंने FICA (Foundation for Indian Contemporary Art) के साथ काम किया। उन्होंने कई शो व प्रदर्शनियाँ भी आयोजित की हैं। दिल्ली में निवास।

रिश्तों की नाज़ुक बुनावट लिए मितवा की कहानी, हर उस लड़की की कहानी है जिसने मुश्किलों से हारना सीखा नहीं।



parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

एकलव्य

मूल्य : ₹ 40.00

9789385236365